



Haryana Government Gazette

Published by Authority

© Government of Haryana

No. 20-2025] CHANDIGARH, TUESDAY, MAY 20, 2025 (VAISAKHA 30, 1947 SAKA)

PART-I

Notifications, Orders and Declarations by Haryana Government

हरियाणा सरकार

विरासत तथा पर्यटन विभाग

अधिसूचना

दिनांक 15 मई, 2025

संख्या 12/250-2024/पुरा/2284-92.— चूंकि, हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों तथा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों का हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) के अधीन संरक्षण अपेक्षित है;

इसलिए, अब, हरियाणा प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक तथा पुरातत्वीय स्थल तथा अवशेष अधिनियम, 1964 (1964 का पंजाब अधिनियम 20) की धारा 4 की उपधारा (1) के अधीन प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल, इसके द्वारा, नीचे दी गई अनुसूची के खाना 1 में विनिर्दिष्ट प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारकों को संरक्षित संस्मारक के रूप में तथा उक्त अनुसूची के खाना 2, 3, 4, 5, 6 तथा 7 में विनिर्दिष्ट पुरातत्वीय स्थलों और अवशेषों को संरक्षित क्षेत्र के रूप में घोषित करने का प्रस्ताव करते हैं।

इसके द्वारा, नोटिस दिया जाता है कि इस अधिसूचना के राजपत्र में प्रकाशन की तिथि से दो मास की अवधि की समाप्ति पर या उसके पश्चात् सरकार, ऐसे आक्षेपों या सुझावों, यदि कोई हों, के साथ जो प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार, विरासत तथा पर्यटन विभाग, चण्डीगढ़ द्वारा प्रस्ताव के सम्बन्ध में किसी व्यक्ति से इस प्रकार विनिर्दिष्ट अवधि की समाप्ति से पूर्व प्राप्त किए जाए, पर विचार करेगी।

अनुसूची

प्राचीन तथा ऐतिहासिक संस्मारक का नाम	पुरातत्वीय स्थलों तथा अवशेष का नाम	गांव/शहर का नाम	तहसील/जिला का नाम	संरक्षणाधीन राजस्व खसरा/किला संख्या	संरक्षित किया जाने वाला क्षेत्र कनाल-मरला	स्वामित्व	विशेष कथन
1	2	3	4	5	6	7	8
छतरियों का समूह, 17वीं-18वीं शताब्दी पूर्व	छतरियों का समूह 17वीं-18वीं शताब्दी पूर्व	रेवाड़ी	रेवाड़ी	लाल डोरा (नगर परिषद)	1-8	निजी (जैन मंदिर-रेनू सागर तथा दीपक पोसवाल)	रेवाड़ी-गुरुग्राम सड़क पर रेजांग ला स्मारक के सामने पूरन सिंह बाग में पाँच छतरियों का एक समूह स्थित है। इन संरचनाओं का निर्माण राव नंद राम के वंशजों ने करवाया था। राव तेज सिंह ने इन छतरियों के वर्तमान स्थल पर 40 बीघा का एक निजी

						<p>उद्यान (बाग) बनवाया था। रेवाड़ी एक रियासत थी और उस पर महान स्वतंत्रता सेनानी राजा राव तुलाराम के पिता राव पूरन सिंह का शासन था। पूरन सिंह राव तेज सिंह के बड़े बेटे थे। पहली, दूसरी और चौथी छतरियाँ एक मंजिला और आकार में अष्टकोणीय हैं। वे अष्टकोणीय डूमों द्वारा समर्थित गुंबददार छतों की विशेषता रखते हैं, जो एक भव्य दृश्य प्रभाव पैदा करते हैं। प्रत्येक में सभी तरफ कई नुकीले मेहराबदार उद्घाटन हैं, जो उनके सौंदर्य अपील को बढ़ाते हैं। मेहराबों के बीच की दीवारों में आले शामिल हैं, जो संभवतः सजावटी और कार्यात्मक दोनों उद्देश्यों के लिए काम करते थे। तीसरी छतरी अष्टकोणीय के बजाय चौकोर होने के कारण विशिष्ट है। यह भी एक मंजिला है और इसके ऊपर एक गुंबद है। अष्टकोणीय छतरियों के समान, इसमें प्रत्येक तरफ तीन नुकीले मेहराबदार उद्घाटन हैं, जो इसकी स्थापत्य कला में योगदान करते हैं। पांचवीं छतरी दक्षिण-पश्चिम छोर पर स्थित है। यह एक दो मंजिला आयताकार संरचना है। इस छतरी में तीन ऊँचाइयों पर तीन नुकीले मेहराबदार उद्घाटन का एक सेट है, जो समूह के भीतर इसकी प्रमुखता को बढ़ाता है। इसमें एक केंद्रीय कक्ष भी है, जो यह सुझाव देता है कि यह किसी विशेष कार्य के लिए इस्तेमाल किया जाता होगा। सभी छत्रियाँ अपनी परिधि पर छज्जों (लटकती हुई छत) से सजी हुई हैं, जो छाया प्रदान करती हैं और इमारतों की कार्यक्षमता को बढ़ाती हैं। आयताकार छतरी के छज्जों को पत्थर के ब्रैकेट द्वारा सहारा दिया गया है, जो शिल्प कौशल के स्तर को दर्शाता है और संरचनात्मक अखंडता को मजबूत करता है। ये सभी एक गेट वाले घेरे के भीतर एक ऊँचे मंच पर बनाए गए हैं। सभी पाँच संरचनाएँ ईंट से बनी हैं और चूने के प्लास्टर से ढकी हुई हैं।</p>
--	--	--	--	--	--	---

कला रामचंद्रन,
प्रधान सचिव, हरियाणा सरकार,
विरासत तथा पर्यटन विभाग।

HARYANA GOVERNMENT
HERITAGE AND TOURISM DEPARTMENT

Notification

The 15th May, 2025

No. 12/250-2024/pura/ 2284-92.— Whereas the Governor of Haryana is of the opinion that archaeological sites and remains and ancient and historical monument specified in column 1 of the Schedule given below requires protection under the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964);

Now, therefore, in exercise of the powers conferred under sub-section (1) of section 4 of the Haryana Ancient and Historical Monuments and Archaeological Sites and Remains Act, 1964 (Punjab Act 20 of 1964), the Governor of Haryana hereby proposes to declare the ancient and historical monument specified in column 1 of the Schedule given below, to be a protected archaeological sites and remains specified in columns 2, 3, 4, 5, 6 and 7 of the said Schedule to be a protected area.

Notice is hereby given that the proposal shall be taken into consideration by the Government on or after the expiry of a period of two months from the date of publication of this notification in the Official Gazette, together with objections or suggestions, if any, which may be received by the Principal Secretary to Government, Haryana, Heritage and Tourism Department, Chandigarh from any person with respect to the proposal before the expiry of the period so specified: -

SCHEDULE

Name of ancient and historical monuments	Name of archaeological sites and remains	Name of village/ city	Name of tehsil / district.	Revenue Khasra/ Kila number under protection	Area to be protected Kanal- Marla	Ownership	Remarks
1	2	3	4	5	6	7	8
Group of Chhatris 17 th -18 th CE	Group of Chhatris 17 th -18 th CE	Rewari	Rewari	Lal Dora (Municipal Council)	1-8	Private (Jain Temple- Renu, Sagar and Deepak Poswal)	A group of five Chhatris is located at Puran Singh Bagh, opposite to the Rezan La Memorial on the Rewari-Gurugram Road. These structures were built by the descendants of Rao Nand Ram. Rao Tej Singh built a personal garden (Bagh) of 40 bighas on the present site of these chhatris. Rewari was a princely state and ruled by Rao Puran Singh, father of the great freedom fighter Raja Rao Tularam. Puran Singh was the elder son of Rao Tej Singh. First, Second, and Fourth Chhatris are single-storeyed and octagonal in shape. They feature domed roofs supported by octagonal drums, creating a grand visual effect. Each has multiple cusped arched openings on all sides, enhancing their aesthetic appeal. The walls between the arches include niches, which likely served both decorative and functional purposes. Third Chhatri is distinctive in being square rather than octagonal. It is also single-storeyed and topped with a dome. Similar to the octagonal Chhatris, it has three cusped arched openings on each side, contributing to its architectural coherence. Fifth Chhatri is located at the southwest end. It is a double-storeyed rectangular structure. This Chhatri features a set of three cusped arched openings on three elevations, which adds to its prominence within the group. It also contains a central room, suggesting it may have served a particular function. All the Chhatris are adorned with chhajjas (overhanging eaves) along their peripheries, which provide shade and enhance the buildings' functionality. The chhajjas of the rectangular Chhatri are supported by stone brackets, indicating a level of craftsmanship and reinforcing the structural integrity. All of these are constructed on a raised platform within a gated enclosure. All five structures are built of brick and covered with lime plaster.

KALA RAMACHANDRAN,
Principal Secretary to Government Haryana,
Heritage and Tourism Department.